विचार बिन्दु

थोड़ा सा झूठ भी मनुष्य का नाश कर सकता है। –महात्मा गाँधी

घाव पर मरहम चाहिए, नमक नहीं

हाल ही में रिलीज हुई फिल्म 'द कश्मीर फाइल्स' खूब चर्चा में है। यह फिल्म 1990 में कश्मीरी पंडितों के कश्मीर से पलायन की त्रासदी पर बनाई गई है। यह दावा किया जा रहा है कि इस फिल्म के माध्यम से 30 सालों से दबाये गए सत्य को सामने लाया गया है। स्वयं प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भी ऐसा ही कहा है। उन्होंने इसे बहुत अच्छी और आवश्यक फिल्म बताया है, जिसे सबको देखनी चाहिए। कई भाजपा शासित राज्यों ने इस फिल्म को कर मुक्त कर दिया है। भाजपा के सभी बड़े नेता इस फिल्म को अधिकाधिक लोगों के द्वारा देखे जाने की व्यवस्था कर रहे हैं। मध्य प्रदेश सरकार ने तो इस फिल्म को देखने वाले सरकारी कर्मचारियों को अवकाश भी स्वीकृत करने की घोषणा की है।

इस फिल्म के बारे में दो तरह के विचार सामने आए हैं। कुछ लोग इस पर प्रतिबंध लगाने के पक्ष में हैं तथा अन्य इसे अत्यंत महत्वपूर्ण उपयोगी फिल्म बता रहे हैं। मैं इसे प्रतिबंधित करने के बिल्कुल विरुद्ध हूं क्योंकि अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता सर्वोपरि है और उसकी रक्षा की जानी चाहिये। इसी स्वतन्त्रता का उपयोग करते हुए फिल्म निर्माता ने यह फिल्म बनाई है जो उसका अधिकार है।

प्रश्न केवल इतना कि, क्या यह फिल्म केवल उस समय की घटनाओं से दर्शकों को अवगत कराने की दृष्टि से बनाई गई है या फिर इसका कुछ और ही उद्देश्य है? पहले भी, विभिन्न प्रकार के शासकों के अत्याचारों की फिल्में बनी हैं और आगे भी बनेंगी। इन फिल्मों को देखने से समुदाय विशेष के प्रति कोई घृणा पैदा नहीं होती, किंतु शायद ऐसा करना ही इस फिल्म का उद्देश्य रहा है। शायद इसीलिए, इस फिल्म में कश्मीरी मुसलमानों को पूरी तरह काले रंग में दिखाया गया है। यह सिद्ध करने का प्रयास किया गया है कि कश्मीर के सभी मुसलमान हिन्दुओं पर अत्याचार, बलात्कार, उत्पीड़न करने में संलग्न थे। निर्माता,यह प्रभाव छोड़ने में सफल रहा है। सिनेमा हॉल से निकलने के बाद दर्शक जिस प्रकार की प्रतिक्रियाएं दे रहे हैं, उनसे ऐसा लगता जैसे वे युद्ध घोष कर रहे हों।

स्वतंत्रता संग्राम पर कई फिल्में बनी हैं जिनमें उस समय की फौज और पुलिस द्वारा जिस प्रकार लोगों पर दमन की कार्रवाई की गई, उसे प्रभावी रूप से दिखाया है। इसके बावजूद, हमारे मन में सभी अंग्रेजों के प्रति घृणा एवं बदले की भावना कतई उत्पन्न नहीं होती। ऐसा शायद इस फिल्म के बारे में नहीं कहा जा सकता। ऐसा प्रतीत होता है कि प्रत्येक कश्मीरी मुसलमान, कश्मीरी पंडित परिवारों को प्रताड़ित करने पर ही तुला हुआ था। यह सामान्य जानकारी है कि कश्मीरी पंडितों को बचाने के लिए कई मुसलमानों ने अपना जीवन दांव पर लगा दिया था और कई लोगों को अपनी जान से हाथ भी धोना पड़ा। ऐसे मुसलमानों की हत्या के बारे में निर्माता ने कुछ नहीं दिखाया। ऐसा शायद जानबूझ कर किया गया, अन्यथा जो एजेंडा वह चलाना चाहते थे वह अधूरा रह जाता। जब उद्देश्य ही एक धर्म के अनुयायियों में दूसरे धर्म के अनुयायियों के प्रति घृणा, कटुता एवं वैमनस्य उत्पन्न करना हो तो फिर इंसानियत को जिंदा रखने की कोशिश करने वाले संवेदनशील लोगों का जिक्र भला इस फिल्म में क्यों होता?

सत्ताधारी दल इस फिल्म को न केवल भरपूर समर्थन दे रहा है, अपितु सभी नागरिकों से ऐसा करने हेतु कह भी रहा है। संभव है, ऐसा करके वे अपना वोट बैंक बढ़ाना और मजबूत करना चाहता हो। कहा जाता है, पाशविक प्रवृत्ति की यही निशानी है कि 'आंख के बदले आंख', 'जान के बदले जान' की बात की जाए। आज जो पीढ़ी कश्मीर में है, उन युवाओं का क्या कसूर है, यदि उनके कुछ पूर्वजों ने पंडित परिवारों के प्रति किसी भी प्रकार का गलत व्यवहार किया है? क्या उनके कुछ पूर्वजों द्वारा किये गए दुर्व्यवहार का बदला वर्तमान कश्मीरी मुसलमानों से लिया जाएगा? क्या ऐसा करने के लिए प्रेरित कर हम उन्हें पशुवत व्यवहार करने के लिए नहीं उकसा रहे हैं? यह कोई नहीं कह रहा है कि फिल्म में जो दिखाया गया, वह सच नहीं है। किन्तु यह अवश्य सही है कि जो दिखाया गया, केवल वही सच नहीं है। सच और भी बहुत कुछ है, जिसे जानबूझ कर नहीं दिखाया गया। निर्माता ने अपने एजेंडा की पूर्ति के लिए सच का उतना ही भाग दिखाया जो उसे दिखाना था। शायद निर्माता किसी और के एजेंडा की पूर्ति में सहायक होना चाह रहा था। ऐसा करके, हम किसका भला करेंगे, कहा नहीं जा सकता।

किसी भी तरह से, बदले की भावना भरना, देश एवं उसके नागरिकों के हित में नहीं है। ऐसा करके कोई दल अपने चुनावी संभावनाओं को भले ही अच्छा कर ले, किंतु इंसानियत को कम करने का ही काम करेंगे।

पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेई ने कितनी अच्छी बात कही थी कि कश्मीरियों के साथ पूरा बर्ताव 'जम्हूरियत, कश्मीरियत और इंसानियत' के आधार पर निर्धारित होगा होगा। इस फिल्म के परिणाम स्वरूप तो लगता है, इंसानियत की बात करना ही एक प्रकार से अपराध मान लिया जाएगा। आज भी जो लोग इस फिल्म के दृष्टिकोण का विरोध करते हैं या उस पर अपनी स्वतंत्र विचारों को व्यक्त करते हैं, उन्हें देशद्रोही घोषित करने में कोई समय नहीं लगाया जाता। जिस प्रकार निर्माता की अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता यह फिल्म बनाने में रही है, उसी प्रकार से उन लोगों को भी अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता है, जो इस बारे में निर्माता से मत भिन्नता रखते हैं। कुछ लोग इस फिल्म को अर्ध–सत्य मानते हैं, पूर्ण सत्य नहीं। इंसानियत का तकाजा है कि नागरिकों में बदले की भावना को बढ़ाने के स्थान पर उस समय के दिए हुए घावों पर मरहम लगाया जाए। पुराने घावों को को कुरेदने से या उन पर नमक छिड़कने से, घृणा का वातावरण ही उत्पन्न होगा। जो प्रयास कश्मीरी लोगों के दिलों को जीतने का किया जाना प्रस्तावित है, उन्हें ठेस ही पहुंचेगी।

उस समय जिन मुसलमानों ने अपने पड़ोसी पंडित परिवारों की रक्षा के लिए अपना सब कुछ दांव पर लगा दिया, उन्हें भी याद किया जाना चाहिए। इस प्रकार की भावना रखने वालों को न केवल सम्मान दिया जाना चाहिए अपितु प्रोत्साहित भी किया जाना चाहिये।

प्रधानमंत्रीजी ने भी कहा है कि कश्मीरियों से दिल की दूरी कम करनी होगी। क्या इस प्रकार की फिल्म को पूरा सरकारी समर्थन देकर क्या वे दिल की दूरी बढ़ाने का काम नहीं करेंगे? कोई भी व्यक्ति, 1990 में हुए कश्मीरी पंडितों के पलायन से अत्यंत दुखी हुए बिना नहीं रह सकता, न उस प्रकार का कृत्य करने वालों के प्रति किसी प्रकार की सहानुभूति रख सकता है।

उस समय जिन मुसलमानों ने अपने पड़ोसी पंडित परिवारों की रक्षा के लिए अपना सब कुछ दांव पर लगा दिया, उन्हें भी याद किया जाना चाहिए। इस प्रकार की भावना रखने वालों को न केवल सम्मान दिया जाना चाहिए अपितु प्रोत्साहित भी किया जाना चाहिये। पाकिस्तान की शह और साजिश पर जिन लोगों ने भी पंडितों पर अत्याचार किए उनके विरुद्ध सख्त कार्यवाही की जानी चाहिए, किन्तु उसके कारण समस्त कश्मीरी मुसलमानों को एक श्रेणी में रख देना अनुचित होगा। हमें यह भी याद रखना चाहिए कि, जो मुसलमान, धर्म के आधार पर बने पाकिस्तान के साथ नहीं गए एवं धर्मनिरपेक्ष भारत में रहना स्वीकार किया, उनकी आस्था भारत की धर्मनिरपेक्षता में कितनी दृढ़ रही होगी? अब स्वतंत्रता के 75 वर्ष पश्चात उनके मन में असुरक्षा का भाव उत्पन्न करना अथवा उनके प्रति अन्य समुदायों में घृणा का भाव उत्पन्न करना क्या उनके प्रति विश्वासघात नहीं होगा, जिन्होंने भारत में रहने का निर्णय किया? ऐसा करके हम क्या हासिल कर पाएंगे?

आज की युवा पीढ़ी कई प्रकार की अन्य समस्याओं से ग्रस्त है जैसे अशिक्षा, स्वास्थ्य की कमी, बेरोजगारी आदि। इन से ध्यान हटाने में भले ही यह फिल्म कुछ हद तक सफल हो जाए, किंतु इसका दीर्घकालीन प्रभाव देश हित में नहीं होगा। धारा 370 के हटने के पश्चात कश्मीरियों के मन में जिस प्रकार की भावना घर कर गई थी, उसे धीरे–धीरे समाप्त करने की आवश्यकता थी। इस फिल्म के समर्थन से कहीं ऐसा ना हो कि वह अपने आप को और अधिक असुरक्षित व अलग–थलग महसूस करने लगे?

यह भी उल्लेखनीय है कि भाजपा को सत्ता में आए आठ वर्ष होने को आए हैं और अब तक वह कश्मीरी पंडितों का कश्मीर में पुनर्वास नहीं कर पाई है? ऐसे समय में, इस फिल्म के समर्थन के बाद, क्या पंडित परिवारों के वापस कश्मीर में लौटने की संभावनाओं को सरकार द्वारा कम नहीं किया जा रहा है?

कश्मीर में रहने वाले हिंदू और मुसलमान, सदियों से प्रेम से साथ रहते आए हैं। इस मधुर संबंध को पाकिस्तान के उकसाने से, कुछ स्थानीय लोगों ने, 1990 से तोड़ने का प्रयास लगातार किया है। ऐसे ही लोगों (आतंकवादियों) द्वारा उत्पीड़न किए जाने पर लगभग पाँच लाख कश्मीरी पंडितों को घर छोड़कर जाना पड़ा। आज वे देश के कई भागों में बस चुके हैं एवं जैसे–तैसे, जीवन को पटरी पर ला पाए हैं।

सत्ताधारी दल और सरकारी समर्थन तथा प्रचुर प्रचार के परिणाम स्वरूप, यह फिल्म अब तक 100 करोड़ रुपये से अधिक का व्यापार कर चुकी है। इस फिल्म पर चर्चा के माध्यम से कई टीवी चैनल, अपनी टीआरपी बढ़ा कर अच्छा खासा पैसा बना चुके हैं। सत्ताधारी दल अपना वोट बैंक और सुदृढ़ करने में लगा हुआ है। कई लोग, जो अब तक निष्पक्ष रुप से पूरे घटनाक्रम को देखते थे, उनमें से कई अब उसे एक धर्म विशेष की दृष्टि से देखना प्रारंभ कर चुके हैं।

यह भी संभव है कि इस फिल्म की प्रतिक्रिया स्वरुप अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का उपयोग करते हुए गुजरात के दंगों और दिल्ली में सिखों पर हुए अत्याचारों के बारे में भी फिल्में बन जाएँ। क्या सरकार, चाहे वो किसी भी दल की क्यों न हो, इन फिल्मों को भी उतना ही प्रसारित–प्रसारित करके समर्थन देना चाहेंगी जैसा 'दी कश्मीर फाइल्स' को दिया है? यह तो देश की बहुसंख्यक जनसंख्या की परिपक्वता का प्रमाण है कि वह इस फिल्म के बनने के बाद भी अल्पसंख्यक समुदाय के प्रति बदले की लेने की भावना से भर नहीं गई है।

निर्माता, फिल्म को पूर्णता से प्रस्तुत नहीं करने के बारे में एक तर्क दे सकते हैं कि यह डॉक्यूमेंट्री नहीं है एवं केवल उस समय की घटनाओं पर आधारित है। ऐसा करके वह तकनीकी रूप से भले ही अपने आप को बचा लें, किंतु इस आरोप से तो निश्चित रूप से नहीं बच सकते हैं कि उनका काम केवल एक फिल्म बनाना नहीं, अपितु किसी एजेंडा को आगे बढ़ाना रहा है।

फ़िलहाल जिस प्रकार का माहौल इस फिल्म को लेकर बनाया जा रहा है, ऐसा प्रतीत होता है कि वे अपने उद्देश्य में सफल रहे हैं। अब देखना केवल यह है कि निर्माता, सत्ताधारी दल और टीवी चैनल तो अपना एजेंडा पूरा करने में सफल होते दीख रहे हैं, किन्तु भारत और भारतीयों के मूल एजेंडा जैसे– बेरोजगारी, शिक्षा, स्वास्थ्य, सुरक्षा और सुशासन का क्या होगा?

–अतिथि सम्पादक,
राजेन्द्र भाणावत
(पूर्व आई.ए.एस. अधिकारी)

फिल्म ''द कश्मीर फाइल्स'' देशभक्ति का तड़का और रोटियों की जुगत

कश्मीर से पण्डितों के पलायन के जख्म कभी नहीं भरेंगे। आजाद भारत में यह घटना एक दुर्भाग्य के रूप में सदा के लिए अंकित हो गई। चार लाख से अधिक कश्मीरी पण्डित अपना घर छोड़कर दर दर की ठोकरें खाने के लिए मजबूर हो गए। आजद मुल्क के लोग अपने ही वतन में शरणार्थियों के रूप में भटके देश का सिर शर्म से झुक गया लेकिन इससे भी बड़ा अफसोस यह है कि किसी भी सरकार ने कश्मिरियों के इस दर्द को, इनके जख्म को कायदे से दूर करने के लिए कोई ठोस कदम नहीं उठाए हैं। हां इसके विपरीत इस मुद्दे पर राजनैतिक रोटियां सेंकने और भावनाओं का तड़का लगा कर फिल्म निर्माण द्वारा अपनी जेबें भरने का काम खूब होता रहता है। इस समय कश्मीर मसला एक बार फिर फिल्म कश्मीर फाइल के कारण चर्चा में है।

फिल्म पर राजनीति भी शुरु हो गई है गुजरात, हरियाणा सरकारों ने इसे टैक्स फ्री धोषित कर दिया है आने वाले समय में और राज्य सरकारें भी ऐसा कर सकती हैं। कश्मीर से पण्डितों के पलायल के लिए एक तबका जम कर कांग्रेस को कोसता है तो एक वर्ग भाजपा को भी कम दोषी नहीं मानता।

जिन्हें इतिहास मालूम नहीं है उन्हें ज्ञात होना चाहिए कि जिस दिन जम्मू कश्मीर से 4 लाख से अधिक पण्डितों को कश्मीर से भगाया गया वह तारीख थी 19 जनवरी 1990, उस दिन केंद्र में विश्वनाथ प्रताप सिंह प्रधानमंत्री थे, जनता दल गठबंधन की सरकार थी और भारतीय जनता पार्टी के समर्थन से सरकार बनी थी और चल रही थी। उस समय अलगाववादी नेता मुफ़्ती मुहम्मद सईद देश के गृहमंत्री थे जिनकी बेटी महबूबा मुफ़्ती हैं। उस समय जम्मू कश्मीर के राज्यपाल बीजेपी नेता जगमोहन थे। उस समय वहां राज्यपाल शासन था जो कि केंद्र सरकार के अधीन होता है।

फिर भी इस सबसे कोई इसका आरोप कांग्रेस पर नही लगाए तो समझ लें कि वह जानबूझ कर तथ्यों से खिलवाड़ कर रहा है अंजान है या पब्लिक को बेवकूफ बना रहा है। कश्मीर में ये हालात एकाएक नहीं बने थे, ये आग वहां वर्षों से धधक रही थी और कांग्रेस वहां वर्षों से सत्ता भोग रही थी। कांग्रेस की आंखों के सामने देखते–देखते कश्मीर से हिन्दुओं का आंकड़ा शून्य हुआ था। जाहिर सी बात है कांग्रेस का दामन इस मसले पर पूरी तरह दागदार है लेकिन कांग्रेस से इतर सरकारों ने भी बाद में कश्मीरी पण्डितों के पुर्नवास और उनके भरोसे को बहाल करने का ठोस काम नहीं किया। कश्मीर के मसले और पण्डितों के मामले पर विवेक अग्निहोत्री की ताजा कश्मीर फाइल फिल्म चर्चा में है ।

अगर निर्माता निर्देशक संकीर्ण सोच पर देशभक्ति की चासनी चढाकर ध्रुवीकरण की राजनैतिक आग में अपनी रोटियां सेंकने की जुगत भिड़ा रहा हो तो सतर्क हो जाएं । दी कश्मीर फाइल्स फिल्म बनाने वाले बस्तर के आदिवासियों पर फिल्म बनाने का भी साहस दिखाएं। फिर ओर पीछे लौटें तो गुजरात दंगे भागलपुर दंगे मुज़फ्फरनगर दंगा मुरादाबाद ईदगाह कांड सहित ऐसी कितनी घटनाएं हैं।

राजेन्द्र मोहन शर्मा

आप और आपके बच्चे 'दी कश्मीर फ़ाइल' भले ही देखें, कश्मीरी पंडितों से हमदर्दी रखें, हो सके तो उनकी मदद करें। आपको ये फिल्म इसलिए देखनी है कि आप नफरत और धार्मिक उन्माद की भट्टी पर चढ कर खुद को इसमें न झोक बैठें। याद रखिये ज़ख्म पर मरहम रखा जाता है कुरेदा नही जाता, कुरेदने से ज़ख्म रिसने लगता है नुकसान बढ़ जाता है। अपने बच्चों के दुश्मन न बनो उनको भी अच्छे भविष्य के साथ जीने दो।

भारतीय वायुसेना के स्क्वाडन लीडर रवि खन्ना की पत्नी अदालत में पहुंची है, इन्होंने दावा किया कि फिल्म 'कश्मीर फाइल्स' सही तथ्यों पर आधारित नहीं है। यह स्पष्ट रूप से स्पष्ट है कि पूरी फिल्म को इस घटना के एक तरफा दृष्टिकोण के रूप मे चित्रित किया जा रहा है। कश्मीर फाइल्स में निश्चय ही मंजे हुए कलाकारों की लिस्ट है इनमें दर्शन कुमार, मिथुन चक्रवर्ती, अनुपम खेर, पल्लवी जोशी, चिन्मय मांडलेकर और प्रकाश बेलवाडी आदि शामिल हैं।

लेखक सौरभ एम पांडे और विवेक अग्निहोत्री की फिल्म का निर्देशन विवेक अग्निहोत्री ने किया है वे इसके निर्माताओं तेज नारायण अग्रवाल, अभिषेक अग्रवाल, पल्लवी जोशी के साथ भी सम्मिलित हैं।

विवेक अग्निहोत्री ने बतौर निर्देशक 'बुद्धा इन ए ट्रैफिक जैम' से अलग लीक हिंदी सिनेमा में पकड़ी है। विवेक ने अपनी पिछली फिल्म 'द ताशकंद फाइल्स' से अपनी लाइन बदली और विवादास्पद मसलों को अपना टूल बनाकर उस पर काम शुरू किया। उसी फिल्म का डीएनए विवेक अब अपनी इस नई फिल्म 'द कश्मीर फाइल्स' में लेकर आए हैं। पिछली बार उन्होंने इतिहास में ढकी पूर्व प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री की हत्या पर फिल्म बना कर शास्त्री जी के प्रति आम आदमी के आदर को भुनाने की कोशिश की थी । इस बार उन्होंने कश्मीर की काफी गंभीर समस्या को अपना टारगेट बनाया है।

निश्चित रूप से फिल्म में जो सामने जो कुछ आता है वह परेशान करने वाला है। निर्माता निर्देशक विवेक अग्निहोत्री का दावा है कि फिल्म 'द कश्मीर फाइल्स' एक तरह से इतिहास की उन 'फाइल्स' को पलटने की कोशिश है जिनमें भारत देश में वीभत्स नरसंहारों के चलते हुए सबसे बड़ा पलायन हुआ । देश में कश्मीर पंडित ही ऐसी कौम है जिसे उनके घर से आजादी के बाद बेदखल कर दिया गया है और करोड़ों की आबादी वाले इस देश के किसी भी हिस्से में कोई हलचल तक न हुई । जिस कश्मीर से कन्याकुमारी तक एक होने वाले देश का दम बार बार बड़े–बड़े नेता भरते रहे हैं, उसके हालात की ये बानगी है।

यह सच है कि इस के सहारे आतंक का एक चेहरा दिखाया गया है लेकिन कहानी कहना सलीका सही नहीं बन पड़ा है, इससे यह फिल्म एक डॉक्यूमेंट्री जैसी बन पड़ी है।

लेकिन यह जरूर कहना पड़ेगा कि फिल्म 'द कश्मीर फाइल्स' को लेकर शुरू में कहीं किसी तरह का शोर शराबा नहीं था लेकिन बाद में विवेक ने चतुराई से कपिल शर्मा के शो में खुद को फिल्म प्रमोशन के लिए न बुलाए जाने को मुद्दा बनाया और कपिल शर्मा के शो का बायकॉट का हैशटैग रिलीज से पहले ट्रेंड कर खुद को सेन्टर में लाने में कामयाब हो गए । आज फिल्म तथाकथित देशभक्ति के उफान के जोर पर साढे छः सौ स्क्रीन पर चल पड़ी है और बड़े बिजनेस की ओर भी बढ रही है। अनुपम खेर रंग मे दिखे हैं। दर्शन कुमार ने फिल्म के अतीत को वर्तमान से जोड़ने का काम किया है। चिन्मय मांडलेकर का अभिनय फिल्म की एक और मजबूत कड़ी है। लेकिन ऐसी फिल्में बिना किसी वैचारिक दर्शन और ठोस समाधान के कभी याद नहीं रहती। अच्छा होता विवेक अग्निहोत्री धारा 370 हटने के बाद कश्मीरी पण्डितों के लिए सरकार द्वारा किए गए प्रयासों पर भी एक नजर डालते तो आम आदमी को हकीकत का पता चलता।

राजेन्द्र मोहन शर्मा
साहित्यकार, चिन्तक एवं शिक्षाविद्)

लेकसिटी में विकसित होगा ''पलाश वन''

उदयपुर,(कासं)। गर्मी की ऋतु में खिलने वाले फागुन के पुष्प, किंशुक और जंगल की ज्वाला के नाम से प्रसिद्ध पलाश के फूलों से लकदक उदयपुर की 'पलाश वैली' में फूलों के सौंदर्य से अभिभूत उदयपुर कलेक्टर ताराचंद मीणा ने सोमवार को अधिकारियों की बैठक लेकर शहर में पलाश वन विकसित करने के निर्देश दिए।

- **पलाश वैली को देख अभिभूत कलेक्टर ने अधिकारियों को निर्देश दिए**

उदयपुर में पलाश वैली में फूलों से लदा पलाश का पौधा।

कलेक्टर मीणा ने जिला परिषद सभागार में आयोजित बैठक में अधिकारियों को संबोधित करते हुए कहा कि गर्मियों की ऋतु में जब सभी पेड–पौधों से पत्ते झड जाते हैं तब पलाश का फूल सुर्ख लाल–केसरी रंग की आभा के साथ खिल उठता है और वन क्षेत्र में अलग ही सौंदर्य बिखेरत है। उन्होंने कहा कि शहर में स्थित खेलगांव के पास की पहाडियां वनस्पति विहीन है ऐसे में यहां पर पलाश के पौधों का रोपण करते हुए इसे पलाश वन के रूप में विकसित किया जा सकता है। इस कार्य के लिए उन्होंने वन विभाग को तकनीकी मार्गदर्शन देने और नगर विकास प्रन्यास के सचिव अरूण कुमार हसीजा को पलाश का पौधरोपण करवाने की जिम्मेदारी सौंपी।

इसी प्रकार उन्होंने स्मार्ट सिटी परियोजना के तहत शहर में हाल ही में शहर कोट के जीर्णोद्धार कार्य की तारीफ करते हुए कहा कि शहर कोट के आसपास भी पलाश के पौधों का रोपण करवाया जा सकता है। इस कार्य के लिए उन्होंने स्मार्ट सिटी सीईओ प्रदीपसिंह सांगावत को निर्देश दिए। कलेक्टर ने बैठक दौरान वर्षा ऋतु की शुरूआत पर अगला वन महोत्सव डाइट परिसर में आयोजित करने की घोषणा करते हुए सभी विभागों के अधिकारियों को निर्देश दिए कि बीस सूत्री कार्यक्रम के तहत जिन विभागों के पास बडा परिसर उपलब्ध है, वहां पर यूआईटी के माध्यम से पौधरोपण करवाया जा सकता है। इसके लिए उन्होंने समस्त संबंधित विभागों को पौधरोपण के लिए अपने प्रस्ताव भेजने के निर्देश दिए।

अचानक तापमान बढ़ने से चने की फसल को नुकसान हुआ

हनुमानगढ़ (निसं)। जिले के नोहर क्षेत्र में तापमान में हुई बढ़ोतरी से किसानों के चेहरों पर चिंता की लकीरे देखी जा रही हैं। अचानक बढ़े तापमान से चने की फसलों को भारी नुकसान हो रहा है । पिछलें चार–पांच दिनों में एक दम से बढ़े तापमान के कारण पककर करीब–करीब तैयार हो चुकी चने की फसलों को नुकसान हो रहा है ।

किसानों ने बताया कि इस बार समय से पूर्व अचानक तापमान में बढ़ोतरी से चने की फसल प्रभावित हो रही है। चने की फसल की डालिया टूट कर नीचे गिर रही हैं। साथ ही फसल में कालापन नजर आ रहा हैं। गेहुं की फसल में भी नुकसान हो रहा हैं। कृषि विभाग के अधिकारी बलवीर सिंह सुथार ने बताया कि गत वर्ष की तुलना में इस वर्ष चने की फसल की बुआई अधिक हुई हैं, लेकिन अचानक बढ़ा तापमान ने किसानों की उम्मीदों पर पानी फेर रहा हैं। इस वर्ष सिंचित क्षेत्र में 43 हजार 163 हैक्टेयर व असिंचित क्षेत्र में 62 हजार 327 हैक्टेयर चने की बुआई हुई हैं। यानि कुल 1 लाख 5 हजार 550 हैक्टेयर में चने की बुवाई हुई हैं। जो पिछले वर्ष की तुलना में काफी अधिक हैं। किसानों ने बताया कि चने की फसल पूरी पकाव है । पांच–दस दिनों में चने की फसल की कटाई शुरू हो जाएगी। मगर बढ़ता तापमान उनकी चिंता बढ़ा रहा है।

प्राकृतिक माहौल में पशु विचरण करेंगे तो गोबर गैस से पशुपालकों के चूल्हे जलेंगे : मंत्री धारीवाल

कोटा, (निसं)। नगरीय विकास एवं स्वायत्त शासन मंत्री शांति धारीवाल की पहल पर प्रदेश ही नहीं देश की वो अनूठी योजना जो कोटा शहर को कैटल फ्री शहर तो बनाएगी ही साथ ही पशुपालकों को प्राकृतिक माहौल के बीच शहरी क्षेत्र की सभी सुविधाएं उपलब्ध करवाने और उनके जीवन स्तर में आमूलचूल परिवर्तन करने वाली नगर विकास न्यास कोटा की देवनारायण योजना तैयार हो चुकी है। यूडीएच मंत्री शांति धारीवाल ने बताया कि योजना के तहत जहां परिसर में पशुओं के लिए तमाम सुविधाओं को विकसित किया गया है वही पशुपालकों के आवासों में नेचुरल गोबर गैस की सप्लाई के कनेक्शन का कार्य भी पूर्ण हो चुका है। योजना के तहत 738 आवासों का मय बाड़े, चारा स्टोर की सुविधा के साथ निर्माण कार्य पूरा हो चुका है । इसके साथ ही देवनारायण योजना में पशुपालकों उनके परिवारों के लिए पानी, बिजली, सड़क, चिकित्सा, पुलिस चौकी, प्रशासनिक भवन आदि की सुविधाएं भी उपलब्ध करवा रही है यही नहीं पशुपालकों के लिए सामुदायिक भवन, बच्चों के लिए स्कूल, चिकित्सालय, पशु चिकित्सालय जैसी सभी सुविधाएं भी दी जा रही है।

- **देश की सबसे अनोखी योजना से शहर बनेगा कैटल फ्री**
- **पशुपालकों के जीवन में होगा बड़ा बदलाव : धारीवाल**

कोटा में पशुपालकों की देवनारायण नगर एकीकृत आवासीय योजना में देश का दूसरा सबसे बड़ा बायोगैस संयंत्र स्थापित हो रहा है।

पशुओं के लिए तालाब, खुला चारागाह, विचरण के लिए अनुकूल माहौल इस अनूठी योजना में उपलब्ध है। न्यास के विशेष अधिकारी आर डी मीणा के अनुसार पशुपालकों के लिए बनाई गई यह योजना देश की अनोखी योजना है। योजना को लॉन्च करने से पूर्व देशभर में पशुपालकों के लिए बनाई गई योजनाओं का अध्ययन व अवलोकन कर आधुनिक संसाधनों का समावेश प्राकृतिक माहौल में इस योजना को अमलीजामा पहनाया गया है यह योजना दूसरे राज्यों के लिए भी प्रेरणा बनेगी। योजना का कार्य लगभग कंप्लीट हो चुका है अब जल्द ही पशुपालकों को शिफ्ट किया जाएगा। धारीवाल ने बताया कि इतना बड़ा बायोगेस प्लांट जब कोटा में स्थापित होगा तो दुसरी जगहों पर भी नेचुरल गैस के प्रति रूझान बढ़ेगा।

प्रदेश का पहले सबसे बड़ा गोबर गैस प्लांट एग्रीकल्चर वेस्ट और गोबर से सीएनजी व बायोगैस तैयार की जाएगी। यह प्लांट करीब 30 करोड़ रुपए की लागत से 5 एकड़ जमीन पर बनाया जा रहा है । प्लांट से प्रतिदिन 400 क्यूबिक मीटर बायोगैस और सीएनजी और एक टन मीटर ऑर्गेनिक फर्टिलाइजर का निर्माण भी होगा। प्लांट के उत्पादों की बिक्री नगर विकास न्यास, राजस्थान स्टेट गैस लिमिटेड के साथ करेगा।

यहां 150 टन गोबर व मंडी वेस्ट की प्रतिदिन क्षमता का यह प्लांट जीरो पॉल्यूशन हाई बायोगैस (जेडपीएचबी) तकनीकी पर काम करेगा जिसमें बायो सीएनजी, बायोगैस, ऑर्गेनिक लिक्विड व सॉलिड फर्टिलाइजर का भी तैयार किया जाएगा। इस प्लांट से ही देवनारायण एकीकृत आवासीय योजना में बने 738 मकानों की सप्लाई जोड़ दी गई है। ऐसे में इन मकानों की रसोई में नेचुरल गैस से ही खाना बनेगा। इसके साथ ही नगर विकास न्यास ने राजस्थान स्टेट गैस लिमिटेड से करार किया हैं। यहां बनने वाली कंप्रेसर नेचुरल गैस (सीएनजी) को व्हीकल और इंडस्ट्री सप्लाई के लिए भी दिया जाएगा।

150 टन प्रतिदिन क्षमता के गोबर गैस प्लांट का निर्माण कार्य बेंगलुरु की नॉलेज इंटीग्रेशन सर्विसेज प्राइवेट लिमिटेड कर रही है। कंपनी के सीनियर साइट इंजीनियर राजा मुरूगन ने बताया कि कोटा में बन रहा यह प्लांट देश का दूसरा सबसे बड़ा बायोगैस का प्लांट है। इससे पहले इंदौर में बीते दिनों ही प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 550 टन प्रतिदिन क्षमता के प्लांट का उद्घाटन किया है। देश के दूसरे सबसे बड़े इस बायोगैस संयंत्र का रखरखाव 5 वर्ष तक निर्माण करने वाली कंपनी ही करेगी। सीएम अशोक गहलोत द्वारा इसकी आधारशिला रखी गई थी।

राशिफल

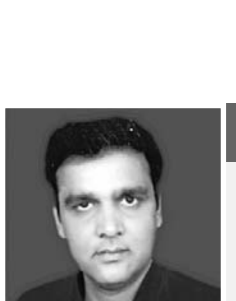

पंडित अनिल शर्मा

मंगलवार 22 मार्च, 2022

चैत्र मास कृष्ण पक्ष, पंचमी तिथि, मंगलवार, विक्रम संवत 2078, विशाखा नक्षत्र रात्रि 8:14 तक, हर्षण योग दिन 1:09 तक, कौलव करण सांय 5:23 तक, चन्द्रमा दिन 2:33 पर वृश्चिक राशि में प्रवेश करेगा।

ग्रह स्थितिः सूर्य–मीन, चन्द्रमा–तुला, मंगल–मकर, बुध–कुम्भ, गुरू–कुम्भ, शुक्र–मकर, शनि–मकर, राहु–वृष, केतु–वृश्चिक राशि में।

आज कुमार योग रात्रि 8:14 तक है। आज रंग पंचमी, श्री जयंती है और राष्ट्रीय चैत्र मास आरम्भ होगा। शक सम्वत 1944 आरम्भ होगा।

श्रेष्ठ चौघड़िया: चर 9:33 से 11:04 तक, लाभ–अमृत 11:04 से 2:04 तक, शुभ 3:34 से 5:05 तक।

राहूकाल: 3:00 से 4:30 तक। सूर्योदय 6:33, सूर्यास्त 6:35

मेष
अपने आवश्यक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। सामूहिक प्रयासों से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। दिन के मध्यान्ह पश्चात अष्टम चन्द्र शुभ नहीं है। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा।

वृष
अस्त–व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। दिन के मध्यान्ह पश्चात परिवार में धार्मिक–सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं।

मिथुन
व्यावसायिक कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। दिन के मध्यान्ह पश्चात विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अस्त–व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा।

कर्क
घर–परिवार में अतिथियों का आगमन रहेगा। परिवार में वाद–विवाद टालना ठीक रहेगा। दिन के मध्यान्ह पश्चात आवश्यक और महत्वपूर्ण कार्यों के संबंध में दुविधा बनी रहेगी। परिजनों के व्यवहार के कारण मन खिन्न हो सकता है।

सिंह
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिचितों के सहयोग से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी। दिन के मध्यान्ह पश्चात घर–गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है।

कन्या
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक विवादों से राहत मिल सकती है। दिन के मध्यान्ह पश्चात परिवार में सुसंदेश प्राप्त होंगे।

तुला
मनःस्थिति ठीक रहेगी। मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। आवश्यक कार्य सुगमता से बनने लगेंगे। दिन के मध्यान्ह पश्चात आर्थिक कारणों से अटके हुए व्यावसायिक कार्य बनने लगेंगे।

वृश्चिक
धार्मिक–सामाजिक समारोह पर धन खर्च होगा। घर–गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। दिन के मध्यान्ह पश्चात तानसिक तनाव दूर होगा। व्यावसायिक/आर्थिक कार्यों में प्रगति होगी।

धनु
आर्थिक मामलों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक वार्ता के लिए दिन अच्छा रहेगा। दिन के मध्यान्ह पश्चात अनर्गल कार्यों में समय खराब हो सकता है। अनावश्यक धन खर्च होगा।

मकर
व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। चलते कार्यों में प्रगति होगी। महत्वपूर्ण कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। आय में वृद्धि होगी।

कुंभ
धार्मिक कार्यों में भाग लेने का अवसर मिलेगा। धार्मिक स्थान की यात्रा का कार्यक्रम बन सकता है। दिन के मध्यान्ह पश्चात व्यावसायिक सफलता से मनोबल बढ़ेगा। नौकरीपेशा व्यक्तियों को अतिरिक्त जिम्मेदारी मिल सकती है।

मीन
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। बनते कार्य बिगड़ने का भय है। दिन के मध्यान्ह पश्चात आवश्यक कार्य के लिए बाहर जाने का कार्यक्रम बन सकता है। व्यावसायिक खर्चों पर नियंत्रण रखना ठीक रहेगा।